ऐसे थे महान तपस्वी....

- पेज १ का शेष..

नींव इतनी गहरी रखी जो आज उनकी राहों पर लाखों लोग आगे आये। कर्म और व्यवहार में उन्हें स्वार्थ स्पर्श तक नहीं कर सका। कुछ महानताएँ हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं -

1- वे महान कर्मयोगी थे - वे कर्म करते हुए कर्मातीत थे। कर्मयोगी केवल वे नहीं होते जो कर्मठ हों या जो समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत हों। कर्मयोगी उन्हें कहा जाता है जो कर्म करते हुए भी योगयुक्त रहते हों। जिनके मन में कर्म की छाया तनिक भी न रहती हो। जो निष्काम हों तथा कर्मबंधन से मुक्त रहते हों। वे ज्ञान-मुरली सुनाने से लेकर, दो घण्टा पत्र पढ़ने व लिखने का कार्य करते थे। सारे यज्ञ में प्रतिदिन चक्कर लगाते थे। सब कारोबार का संचालन करते थे। रात्रि क्लास कराने के बाद वे सभी वत्सों के कक्ष में जाया करते थे, यह देखने के लिए कि सबके पास पर्याप्त सुविधाएँ हैं, सब ठीक से आराम कर रहे हैं। सब बच्चों को सुलाकर फिर वे स्वयं सोते थे। इन सब कार्यों में उनका निर्मल पितृवत प्रेम व हल्कापन, चेहरे की मुस्कान व रमणीकता साफ देखी जा सकती थी। वे कर्म ऐसे करते थे मानो वे स्वयं कुछ न कर रहे हों, परमात्मा ही उनके द्वारा सबकुछ करा रहा हो। वे बुद्धि से सर्वदा ब्रह्मलोक में ही विचरण करते थे।

2- वे निर्माण व उपराम थे - महानात्माएँ, स्वमानधारी व निरहंकारी होती हैं। अहंकार मनुष्य को अलंकारहीन बना देता है। वे बचपन से ही हीरों के पारखी व अति कुशाग्र बुद्धियुक्त थे। उन्होने अपनी बुद्धि को दिव्य व दूरांदेशी बना दिया था। लौकिक में वे धन सम्पन्न भी थे उनका मान-सम्मान भी बहुत था। राजा भी उन्हें मान देते थे, परन्तु कभी किसी ने भी उन्हें अभिमान से बोलते या क्रोध करते नहीं देखा। स्वयं सर्वशक्तिवान के रथ परन्तु निरअभिमानी। सर्व शक्तियों, सर्व वरदानों व सर्व सिद्धियों से सम्पन्न परन्तु अहंकार की सम्पूर्ण इतिश्री। स्वयं सर्वश्रेष्ठ भाग्य के धनी व मास्टर भाग्यविधाता परन्तु भोलेनाथ के साक्षात् स्वरूप।

विश्वकल्याण करते हुए, हजारों वत्सों की पालना करते हुए व स्वयं प्रकृति के मालिक होते हुए भी वे पूर्णतया उपराम थे। कहीं भी अटके हुए नहीं थे। सभी इच्छाओं, कामनाओं व कर्मेन्द्रियों पर उन्होने विजय प्राप्त कर ली थी।

3- वे सम्पूर्ण समर्पित थे - ''भगवानुवाच - सम्पूर्ण समर्पणता ही सम्पूर्णता है।'' उन्होने न केवल तन शिव को दे दिया था, न केवल धन यज्ञ सेवा में अर्पित कर दिया था, बल्कि सम्पूर्ण समय, प्रत्येक श्वांस, अपनी सम्पूर्ण शक्तियां व प्रत्येक संकल्प भी प्रभु अर्पण कर दिया था। बुद्धि की लगाम भी शिव के हाथों में थमा दी थी। उनका प्रत्येक कर्म प्रभु-कार्य अर्थ था, विश्व कल्याणार्थ था। कितनी सूक्ष्म चीजें हैं ये। मैंपन, अपनापन कहीं भी नहीं,सबकुछ तेरा। तब ही तो शिव बाबा ने भी स्वर्ग का राज्य भाग्य दिखाकर उन्हें कहा -ये तेरा।

सारे विश्व में, सम्पूर्ण भक्तिकाल में व समस्त तपस्वियों के समक्ष आदर्श थे वे सम्पूर्णता में। जिन्होने सिवाय श्रीमत के कुछ भी नहीं किया। तब ही तो वे सर्वप्रथम सम्पूर्ण फरिश्ता बन गये।

4- सम्पूर्ण बनने के लिए सम्पूर्ण डेडीकेशन था - राजयोग का ज्ञान परमशिक्षक से मिलते ही वे निरंतर योगयुक्त स्थिति की ओर चल पड़े। साधक जानते हैं कि साधना का मार्ग परीक्षाओं का मार्ग है, इस पर आशा व निराशा का भी दौर चलता है, माया भी अवरोध उत्पन्न करती है परन्तु उन्होने महावीर बनकर इसके लिए स्वयं को कुर्बान कर दिया।

बस एक ही लक्ष्य...निरंतर योगयुक्त रहना है, सम्पूर्ण बनना है। समय कहीं भी व्यर्थ नहीं, बातों में कहीं बाह्यमुखता या विस्तार

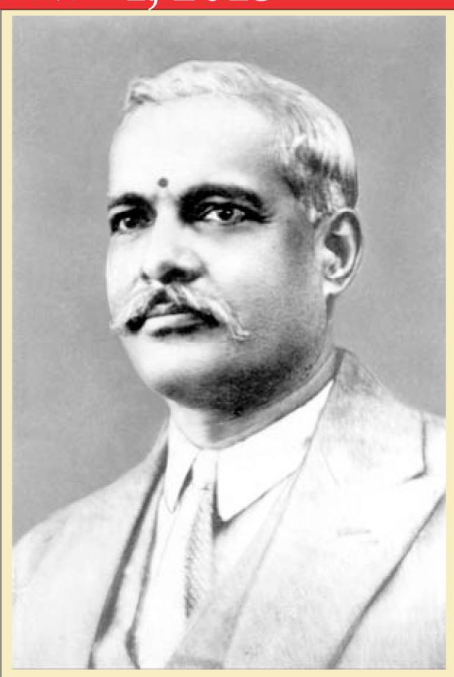

नहीं। विष्णु समान ज्ञान में मग्न और सबकुछ समेटे हुए। अन्यत्र कहीं भी रूचि नहीं। बस अर्जुन की तरह लक्ष्य ही दिखाई देता था। इसे कहते हैं महान लक्ष्य के प्रति स्वयं को डेडीकेट कर देना। न और कुछ पाने की इच्छा, न और कुछ देखने व सुनने की इच्छा।

5- वे महान तपस्वी व वैराग्य सम्पन्न थे - जब से निराकार त्रिमूर्ति शिव ने उनके तन में प्रवेश किया था और उन्होने महाविनाश का साक्षात्कार किया था, तब से ही वे वैराग्य की भावना से परिपूर्ण हो गये थे। धन-दौलत के प्रति उन्हें वैराग्य हो गया था। उन्हें एक ही धुन थी कि शीघ्र ही सम्पूर्ण बनकर मुक्तिधाम में वापिस जाना है। ये विश्व उन्हें नष्ट हुआ सा प्रतीत होता था वे इसे देखते हुए भी नहीं देखते थे। बस तपस्या ही तपस्या।

हम जानते हैं कि तपस्या हर व्यक्ति नहीं कर सकता। जिसमें त्याग व वैराग्य हो, जो इस विश्व से जीते जी मर गया हो, जिसका चित्त निर्विकार व शान्त हो गया हो, उसकी बुद्धि योग में स्थिर होती है। बाबा को तो जन्म से ही स्थिर व दिव्य बुद्धि का वरदान मिल गया था। प्रात: तीन बजे उठकर वे गहन साधना में तत्पर हो जाते थे। अशरीरीपन व आत्मिक दृष्टि का उन्होने बहुत अभ्यास किया था। चाहे वे खेलते हों या खाते हों, सैर कर रहे हों या बात कर रहे हों, वे निरंतर योगयुक्त रहते थे। शास्त्रों की भाषा में कहें तो वे चलते फिरते भी समाधिस्थ रहते थे। उनकी योगसाधना पूर्णत: विश्व कल्याण अर्थ थी।

6- वे सहनशील व आज्ञाकारी थे - कोई भी मनुष्य जब ऐसा मार्ग चुनता है जो परम्पराओं से हट कर हो तो उसका विरोध तो होता ही है। वे इसके लिए तैयार थे। पवित्रता का प्रचार करके उन्होने गालियाँ खाई, परन्तु वे सहनशील बने रहे। जो उनके अपने थे, वे पराये हो गये, जो प्रशन्सक थे वे निदंक बन गये, परन्तु उन्होने सहज भाव से सब कुछ सहन किया। शारीरिक व्याधियों को भी उन्होने हँसते-हँसते पार किया। सहन करना उनकी नेचर थी। उन्हें ये आभास नहीं था कि वे कुछ सहन कर रहे हैं। वे परमात्म-आज्ञाओं का पालन अति प्रेम व विनम्रता से करते थे। शिव बाबा का कहना व उनका करना। जो भी आज्ञाएँ शिव बाबा करते थे, वे सर्वप्रथम उनका पालन करते थे। उनका संकल्प था -पहले मैं करूं तो मुझे देखकर सब करेंगे। क्योंकि वे हर कदम पर परमात्म-आज्ञाकारी रहे इसलिए भविष्य में

शेष पेज 4 पर...